डाक विभाग द्वारा पंजीकृत, पंजीयन संख्या : UNA/007/2014
RNI No. HPHIN/2004/14

समाज-धर्म

जुलाई 2014
₹ 25

क्या कहा पुरी के शंकराचार्य
जगद्गुरु स्वामी स्वरूपानन्द जी सरस्वती ने

शिक्षा एवं पत्रकारिता का अन्योन्याश्रित संबंध

- एन० मोहना
डॉ० प्रदिमा मो० जोन

सूचना क्रांति, संचार क्रांति, [illegible]की क्रांति के साथ-साथ सारी [illegible] में शिक्षा में भी विकास बहुत तेजी [illegible]ढ़ रहा है। नये रूप में बढ़ते [illegible]गिकरण के कारण शैक्षिक क्षेत्र में [illegible]गति एवं परिवर्तन की गति जोर [illegible]ड़ रही है। पुराने और पारंपरिक तौर-[illegible] की बजाए आज नई तकनीकों को [illegible]ने की प्रतिस्पर्धा है। इसका प्रभाव [illegible] में भी देखा जा सकता है। शैक्षिक [illegible]तों के अनुरूप समाचार-पत्र एवं [illegible] टी.वी के कार्यक्रम प्रस्तुत करते [illegible] इससे विषय में गंभीरता आ जाती है। [illegible]न युग में लोगों के बीच बढ़ती [illegible]याँ, समय का अभाव, व्यस्त जीवन [illegible] व्यावसायिक सफलता की आकांक्षा [illegible]रण प्रत्येक मनुष्य के लिए संप्रेषण-[illegible]या एवं इसके विभिन्न साधनों के द्वारा [illegible] का महत्त्व कल्प वृक्ष के समान [illegible]ने लगा। शिक्षा को सुचारु रूप से [illegible]लित करने में संप्रेषण प्रक्रिया एक [illegible] अंग है और इसे तीव्र करना भी बहुत [illegible]वश्यक है अतः संप्रेषण साधनों का [illegible]त्त्व भी बढ़ा है।

विद्या-अमूल्य धन

'शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य के मन को मुक्त करना है, न कि उसे बाँधे हुए चौखटों में बन्द करना है। उसके शारीरिक और बौद्धिक श्रम में सन्तुलन बनाना है ताकि उसका जीवन सर्वांगीण विकास कर सके।'

-जवाहरलाल नेहरु

विद्या ऐसा अमूल्य धन है, जिसको न चोर चुरा सकता है, न राजा छीन सकता है, न भाई-बन्धु बाँट सकते हैं, न पानी गला सकता है और न आग जला सकती है। एक बार धन खर्च करने से घट सकता है, लेकिन विद्या देने से और बढ़ती है और इसको पानेवाला विश्व के किसी भी कोने या भाग में चला जाये, वहाँ सम्मान पाता है। इस विद्या रूपी अमूल्य धन की रक्षा के लिए भगवान् ने हृदय रूपी सन्दूक दिया है, जिसमें किसी भी प्रकार के ताले की आवश्यकता नहीं होती और हमेशा सच्चे साथी के रूप में वह सदा साथ रहती है। शिक्षा में संप्रेषण का सम्बन्ध भूत, वर्तमान और भविष्य काल से है। इनका सम्बन्ध निश्चय ही उज्जवल भविष्य से होता है। भविष्य की कल्पना करके ही हम किसी

शैक्षिक उद्देश्य, शिक्षण-क्रम या शिक्षण विधि का निश्चय करते हैं।

पत्रकारिता के द्वारा शिक्षा का प्रचार-प्रसार:

प्रिंट माध्यम-

बड़े-बड़े समाचार -समूहों (जैसे टाइम्स ऑफ इंडिया पत्र समूह) ने खुद कॉलेजों या विश्वविद्यालयों के शिक्षण के ढाँचों को अपनी जरूरतों के लिए अपर्याप्त मानकर अपने संस्थनों में ही शिक्षा एवं प्रशिक्षण की पृथक शुरुआत की। योग्य एवं अनुभवी शिक्षक की व्यवस्था से पढ़ाना शुरू कर दिया। बाहर से विशेषज्ञों को बुलाकर व्याख्यानों की व्यवस्था की। इससे शिक्षण का स्तर बढ़ा।

पत्रकारिता समाज के प्रत्येक स्पंदन की गति बता सकते हैं। उसी को विकृतियों की प्रस्तोता आदर्श एवं सुधार के लिए सहज उपचार भी माना जाता है। पत्रकारिता जहाँ शिक्षा के प्रचार-प्रसार का माध्यम है, उसमें उत्पन्न होने वाली जागृति का पर्याय है, इसमें उठ रही ज्वालामुखियों का अविरल प्रवाह भी है। सुशिक्षित गतिशील समाज की स्थापना एवं श्रेष्ठ जीवन मूल्यों की स्थापना में पत्रकारिता का महत्वपूर्ण स्थान है। पत्रकारिता के द्वारा हमारे देश में शिक्षा का प्रसार हो रहा है। रेडियो, टेलिविजन, फिल्म, इन्टरनेट आदि से शिक्षा प्रसार हो रहा है इसके साथ पत्रकारिता भी प्रगति की राह पर अग्रसर होती जा रही है। शिक्षा में तथ्यों की पूरी तरह से छान-बीन [illegible] प्रामाणिकता के उपरान्त ही [illegible] अथवा पत्रिका में सूचनाओं का [illegible] किया जाता है। विभिन्न शैक्षिक [illegible] द्वारा चलायी जा रही शैक्षिक [illegible] शिक्षा जगत् की घटनाओं तथा [illegible] समस्याओं को जन-संचार [illegible] द्वारा जनता तक पहुँचाना पत्रकारिता [illegible] वह सकारात्मक पक्ष है जिसके [illegible] विकास से समाज में वैचारिक [illegible] विकसित होगी ही और इसके [illegible] शिक्षण संस्थानों के छात्र-[illegible] समुदाय में भी आपसी सौहार्द तथा [illegible] का वातावरण विकसित होगा।

21 वीं सदी की पत्रकारिता

जो कल था, आज नहीं है, [illegible] आज है, कल नहीं रहेगा। कल [illegible] का आज से कल का संघर्ष है [illegible] अनवरत संघर्ष। यह संघर्ष पत्रकारिता का और शिक्षा में भी कभी खत्म नहीं होता। खत्म होती है तो सिर्फ [illegible] अमरता, अमरता की स्पृहा का [illegible] प्रतिष्ठान का प्रतिमान, उसकी मूर्ति, [illegible] प्रतीक, उसका ध्वज, उसका निशान [illegible] बचते हैं तो सिर्फ प्रतिष्ठानों के ध्वंसा[illegible] उनकी जन श्रुति, उनका इतिहास [illegible] उनकी कहानी। कागज़ के पन्ने पलटने [illegible] बजाय बैठे-बैठे केवल माउस [illegible] स्क्रीन ताकना और खेल-खेल में [illegible] कुछ पढ़ जाते हैं। 'नया शिक्षक' [illegible] तालीम', प्रौढ़ शिक्षा, 'नई शिक्षा' [illegible]

[illegible] शिक्षा', 'भारती', राष्ट्रनिर्माता आदि शिक्षा से संबधित समाचार प्रस्तुत करते हैं। प्रिंट माध्यम के द्वारा शिक्षा को प्रकाशित करने के लिए विभिन्न सूचना का प्रकार है– तापमान, आज होनेवाले कार्यक्रम, परीक्षा सूची, वर्षगाँठ, विज्ञापन, रेलवे तालिका, सिनेमा, निधन सूचना, निविदा सूचना, खेल।

इसके अलावा नाटक और कहानी के द्वारा धार्मिक मूल्यों का प्रचार करते हैं। हर एक समाचार पत्र में विशेष अंक भी छपते हैं। जैसे 'हिन्दू' रविवार के पत्र में शिक्षा और रोजगार के लिए अलग स्तंभ में समाचार प्रस्तुत करते हैं। इस तरह प्रिंट माध्यम एक क्षेत्र में नहीं बल्कि अन्य क्षेत्र में होने वाले सूचना को प्रस्तुत कर शिक्षा का प्रचार–प्रसार करता है।

इलैक्ट्रानिक माध्यम:

रेडियो: आज रेडियो पर सूचनाएँ मिल जाती हैं और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, विभिन्न विज्ञापन, प्रश्नावली आदि विविध कार्यक्रम भी होते रहते हैं। एफ० एम० रेडियो के प्रचलित होने के बाद भारतीय जनमानस में एक नई क्रांति का सूत्रपात हुआ है। एफ.एम. रेडियो के माध्यम से शिक्षा से संबंधित विषयों से लाखों लोग आज लाभान्वित हो रहे हैं। बच्चे प्रसारित गीतों और नाटक के संवादों को जल्दी दोहराने लगते हैं। विशेष वर्ग जैसे नारी जगत्, बाल जगत् ,शिक्षा जगत्, कृषक समाज आदि के लिए विशेष कार्यक्रम होते हैं। यह एक ऐसा माध्यम है,जिसका प्रभाव स्थूल से सूक्ष्म हो गया है, अर्थात् समाचार पत्र को देखना और पढ़ना पड़ता है, जबकि रेडियो में श्रव्य–नाद वाणी गुण हैं।

दूरदर्शन:

दूरदर्शन एक अच्छा सूचना प्रदायक माध्यम है। दूरदर्शन ने लोगों को साक्षर बनाने में सहायता की है। भारतीय समाज में लोकतांत्रिक विषयों को बड़ी गहनता और सूक्ष्मता से पहचाना जाता है।

टी०वी० कार्यक्रमों से शैक्षणिक लाभ:

बच्चों को सीधे शिक्षित करने एवं बहुविध अवधारणाओं का एक साथ ज्ञान देना उन्हें कम आकर्षित करता है।

- संगीत एवं ध्वनि के प्रयोगों से बच्चे जल्दी प्रभावित होते हैं तथा बाल कार्यक्रमों में इसकी जरूरत है।
- जीवन्त परिस्थिति एवं विशिष्ट चरित्रों का बच्चों पर बेहतर प्रभाव होता है।
- बाल कार्यक्रमों को कल्पना एवं यथार्थ के सहमेल से तैयार किया जाए।

निःसंदेह टेलीविजन आधुनिक समाज में शिक्षा का एक प्रभावात्मक माध्यम बन चुका है।

फिल्म: फिल्में गीत देकर विषय को विशिष्ट अर्थ प्रदान करती हैं। वे वास्तविकता का आभास बढ़ाती हैं। फिल्में काल पर भी नियन्त्रण रखती हैं।

उसे आवश्यकतानुसार घटा या बढ़ा कर उसे प्रस्तुत कर सकती हैं। बच्चे शैक्षिक फिल्म से प्रेरणा लेकर नयी गतिविधियाँ प्रारम्भ करते हैं। फिल्में चिन्तन, मनन और सहायता देती हैं। अच्छी फिल्म योग्य प्रशिक्षक या प्रदर्शन की कमी को भी पूरा कर सकती है। वीडियो के प्रसार के कारण अब शैक्षिक फिल्मों की उपयोगिता बढ़ गई है।

इंटरनेट: विद्यार्थी जगत में इंटरनेट काफी लोकप्रिय हो चुका है। परीक्षा से संबंधित हर सवाल का जवाब वेब साइट के जरिए पाया जा सकता है। इसी तरह गुरुकुल डॉट कॉम भारत के विद्यार्थियों को विश्व के अन्य स्थानों पर हो रही शैक्षणिक गतिविधियों के बारे में बताता है। नेट शिक्षक के तौर पर यह साइट विद्यार्थियों को विकसित देशों में विज्ञान और तकनीकी परिवर्तनों के बारे में बताता है। इंटरनेट बच्चों में समुचित विकास करने में एक अच्छा टीचर, अभिभावक की भूमिका निभा सकता है इसमें ई-अखबारों ने काफी अल्प समय में सफलता के नये प्रतिमान गढ़े हैं जिससे यह साफ हो गया है कि आनेवाले समय में यह मजबूती के साथ आमजनों के बीच लोकप्रिय होगा और आमलोगों को इससे लाभ मिलेगा।

इस तरह इलेक्ट्रानिक माध्यम से राजनीतिक समाचार, विकास समाचार, सांस्कृतिक समाचार, मानवीय पक्ष के किसी पहलू से जुड़े समाचार, खेल समाचार मौसम समाचार आदि के द्वारा शिक्षा का प्रचार-प्रसार होता है।

उपसंहार:

शिक्षा एवं पत्रकारिता का संबंध घनिष्ट है। शिक्षा के प्रचार प्रसार के लिए पत्रकारिता एक प्रमुख साधन है। शिक्षा में जो भी नये-आयाम हैं उसे प्रस्तुत करने के लिए पत्रकारिता एक साधन मात्र ही नहीं बल्कि एक मार्ग दर्शक के रूप में भी है। शिक्षा का क्षेत्र बहुत महत्त्वपूर्ण है जिसके लिए हिन्दू, दैनिक जागरण, देशबन्धु, नवभारत टाइमस, नई दुनिया, देश बन्धु, अमर उजाला एवं अन्य कुछ समाचार-पत्रों ने संवाददाताओं की अलग रूप से नियुक्ति की है। इसके साथ ही इलेक्ट्रानिक माध्यम भी सार्फट स्टोरी, विज्ञापन, नाटक, धारावाहिक, गीत, साक्षात्कार आदि के द्वारा मनोरंजक ढंग से शिक्षा का प्रसार करते हैं। आजकल जनसंचार के साधन जनता के विचारों के प्रसार का सबसे बड़ा साधन है। [illegible] धनिकों की वस्तु न होकर जनता की वाणी हैं। वह शेषितों और दलितों की पुकार है। आज वह जनता [illegible] और उत्प्रेरक परामर्शदाता और साथी [illegible] है। वह सच्चे अर्थों में जनता [illegible] का प्रतिनिधित्व करता है। [illegible] का सबसे बड़ा आश्रय है।

- पी०एच०डी० शोधार्थी, [illegible]
विश्वविद्यालय, [illegible]

Under guidance of
Dr Shashi [illegible]